हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र—नाटक एवं निबंध

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

1. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर ध्रुवस्वामिनी का चरित्र चित्रण कीजिए।

अथवा

अभिनेयता की दृष्टि से 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का मूल्यांकन कीजिए। 15

2. नाटक तत्त्वों के आधार पर 'मुक्तिपथ' नाटक की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'मुक्तिपथ' नाटक के आधार पर मीरा का चरित्र चित्रण कीजिए। 15

3. 'भारतीय साहित्य की एकता' निबन्ध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

डॉ. नगेन्द्र के 'कविता क्या है' विषयक विचारों की समीक्षा कीजिए। 15

4. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए– 7½+7½

(क) निबंधकार रामचन्द्र शुक्ल (ख) ललित निबंध का स्वरूप

(ग) नाटक में संवाद का स्वरूप (घ) नाटक में संकलनत्रय

(ङ) हजारीप्रसाद द्विवेदी की निबंध भाषा।

5. निम्नलिखित गद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या लिखिए–

(क) जिनकी आत्मा समस्त भेदभाव को भूलकर अत्यंत उत्कर्ष पर पहुँची हुई होती है, वे सारे संसार की रक्षा चाहते हैं–जिस स्थिति में भूमण्डल के समस्त प्राणी कीट पतंग से लेकर मनुष्य तक सुखपूर्वक रह सकते हैं, उसके अभिलाषी होते हैं, ऐसे लोग विरोध के परे होते हैं। उनसे जो विरोध रखें वे सारे संसार के विरोधी हैं, वे लोक के कंटक हैं। 10

अथवा

जो समझता है कि वह दूसरों का उपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि उसका अपकार कर रहा है, वह भी बुद्धिहीन है। मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास-विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है, नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभियान यदि गलत है, तो दु:ख पहुँचाने का अभिमान तो नितराम् गलत है।

(ख) नीलकण्ठ एक गंभीर दु:ख की तलाश में है। दुनिया में दु:ख तो बहुत है, परन्तु अगम-अगाध गंभीर दु:ख बहुत ही कम। ठीक वैसे ही जैसे काम बोध की खुजलाहट तो सबके पास है, परन्तु निर्मल उदात्त प्रेम की क्षमता बिरले के ही पास होती है।

जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास-विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है, नहीं मिल सका, कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभिमान यदि गलत है, तो दु:ख पहुँचाने का अभिमान तो नितरां गलत।"

(घ) "दुनिया में दुख तो बहुत है, परन्तु अगम-अगाध गम्भीर दुख बहुत ही कम। ठीक वैसे ही जैसे कामबोध की खुजलाहट तो सबके पास है, परन्तु निर्मल उदास प्रेम की क्षमता बिरले के ही पास होती है। काम ऊर्ध्वतर होता हुआ निर्मल ज्योतिष्मान होता जाता है। वैसे ही दुख उलटी दिशा में गंभीर से गंभीरतर होता हुआ प्रगाढ़ और पारदर्शक होता जाता है। ऐसा पारदर्शक कि वह सार्वभौमता का दर्पण बन जाये।"

10

अथवा

''इससे भी बड़ा एक आबिद्ध भाव है, किसी ने उसे गोपी-भाव कहा, किसी ने राधा-भाव, किसी ने महा-भाव, किसी ने समष्टि चेतना, किसी ने ईश्वर में परानुरक्ति, किसी ने केवल प्यार, उससे बिंधना चाहता हूँ, बिंधके अपने पुरुभाव की व्यर्थता का अनुभव करना चाहता हूँ, नारीभाव की श्रेष्ठता को समझना चाहता हूँ। यह आत्मनिषेध को विधिरूप में वरण करने वाला नारीभाव ओढ़नी ओढ़कर नाचने से नहीं आता, न आता है अपने को राधा की सहचरी मानने से, यह केवल मिटने से आता है, चुपचाप मिटने से आता है, बेखुद होने से आता है।''

2. ''प्रसाद ने ध्रुवस्वामिनी नाटक लिखकर सिद्ध कर दिया है कि उनमें मंचीय नाटक लिखने की अपूर्व क्षमता थी।'' इस कथन के आलोक में ध्रुवस्वामिनी नाटक की नाट्यकला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।

अथवा

ध्रुवस्वामिनी नाटक का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए इसकी भाषा शैली पर प्रकाश डालिये। 15

3. मुक्तिपथ नाटक की मूल संवेदना स्पष्ट करते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिये।

अथवा

मुक्तिपथ नाटक का प्रमुख स्त्रीपात्र किसे और क्यों मानते हैं ? उसका चरित्र चित्रण कीजिये। 15

4. कविता क्या है ? निबन्ध के आधार पर नगेन्द्र जी ने कविता की पहचान के लिए किन तत्त्वों पर अधिक जोर दिया है ? उसको स्पष्ट कीजिये।

अथवा

''हमारे देश की संस्कृति सारी विविधताओं के बावजूद एक है। इसी को हमारे साहित्य ने ग्रहण किया है।'' इस कथन को भारतीय साहित्य की एकता निबन्ध के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 15

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए- 7½+7½

(i) ''जयशंकर प्रसाद जितने कुशल कवि थे उतने कुशल गद्यकार भी थे।'' स्पष्ट कीजिए।

(ii) ध्रुवस्वामिनी नाटक के प्रमुख पुरुष पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिये।

(iii) मुक्तिपथ नाटक के नामकरण पर प्रकाश डालते हुए उसके शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

(iv) 'चेतना का संस्कार' शीर्षक का अर्थ विश्लेषण कीजिए।

OOO